डॉ साकेत कुमार
हिन्दी विभाग, बी0 एन0 कॉलेज भागलपुर
ति0 मॉ भा0 विवि, भागलपुर

स्नातक खण्ड – 2
हिन्दी, पत्र – 4

मानस का हंस

प्रश्न 1. उपन्यास कला की दृष्टि से 'मानस का हंस' की समीक्षा कीजिए।

अथवा, 'मानस का हंस' उपन्यास की विशेषताओं का आकलन करें।

अथवा, उपन्यास-कला की दृष्टि से पं0 अमृतलाल नागर कृत 'मानस का हंस' उपन्यास की समीक्षा करें।

उत्तर–'मानस का हंस' पं० अमृतलाल नागर कृत उनका एक ऐतिहासिक और जीवनीपरक उपन्यास है। इसमें उपन्यासकार पं० नागर जी द्वारा महाकवि तुलसीदास की अप्रामाणिक और विवादग्रस्त जीवनी को जीवंत शिल्प चेतना के जरिए का विशेष ध्यान रहा है। पात्रों का चरित्र-चित्रण यहाँ मनोविज्ञान के धरातल पर होने के कारण अत्यंत ही स्वाभाविक बन पड़ा है। इस दृष्टि से कुछेक उदाहरण यहाँ द्रष्टव्य हैं–

अहंभाव की अभिव्यक्ति

'पीहर का कुत्ता भी प्यारा लगता है, यह तो मेरा भाई है।'
(रत्नावली का कथन)

"पति से अधिक उसे अपने पीहर का कुत्ता प्यारा लगता है। कैसी ठेस पहुँचानेवाली बात है। नहीं, इस बात पर मैं कदापि समझौता नहीं करूँगा, रत्नावली को यह समझना ही होगा कि विवाह के बाद स्त्री के लिए पति ही सर्वोपरि है। उसके कुतर्कों और अन्याओं के प्रति भी उसे सादर सप्रेम सिर झुकाना चाहिए, फिर मैं तो न्याय की बात कर रहा हूँ। मेरे घर में बैठकर व्यर्थ में मेरा अपमान करके मेरी रोटी छीननेवाला व्यक्ति अब इस घर में कदापि नहीं आ पाएगा। रत्नावली मुझे भले ही प्राणों से अधिक प्यारी लगती हो, पर उसके इस कृत्य को मैं कदापि प्रश्रय नहीं दूँगा।"
(तुलसीदास का कथन)

उहापोहग्रस्तता

"तुलसी की अहंता को चुभन हुई। मेरा राम प्रेम क्या किसी से कम है?"

आत्मग्लानि

"मोहिनी मेरे राम-प्रेम का हिस्सा बाँट ले गई। मेधाभगत खरा सोना है जबकि मुझमें तांबा मिल चुका है। .....राम के आगे मोहिनी? परब्रह्म मर्यादा पुरुषोत्तम के आगे वेश्या, छिः छिः। तुलसी, गंगा स्नान करने के बाद कीच-कूड़ा भरे नाले में डुबकी लगाने की ललक रखते हो?

किन्तु मोहिनी ..... हाय मोहिनी। नहीं, नहीं। राम-राम-राम-राम .....मोह.....रा.....मोह.....राम।''

(3) संवाद–'मानस का हंस' उपन्यास में संवाद-योजना के अंतर्गत पात्रानुकूलता, संक्षिप्तता, रोचकता, स्वाभाविकता, सजीवता आदि गुणों पर उपन्यासकार का ध्यान विशेषरूप से केन्द्रित रहा है। इसके संवाद पात्रों के चरित्रांकन में काफी सहायक सिद्ध होते हैं। कुछेक स्थलों पर इसके संवाद मार्मिक भी हो गये हैं। इस दृष्टि से कुछेक उदाहरण यहाँ द्रष्टव्य हैं–

''रुदन कम्पित स्वर में रत्ना बोली–

'जा रही हूँ।'

'रो रही हो रत्ना?'

'संतोष के आँसू हैं।'

'अब न बहाओ देवी, नहीं तो मेरे मन का धैर्य और संतोष बँट जाएगा, सेवा का धर्म कठिन होता है।'

–कहते हुए गोसाईं जी ने एक गहरी ठंढ़ी सांस ली।''

प्रामाणिक-प्रतीति का सुखद स्वरूप प्रदान करने के साथ ही यथार्थपरक बनाने के लिए तद्युगीन परिस्थितियों का भी विशद विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

उपन्यास-कला की दृष्टि से प्रस्तुत उपन्यास की समीक्षा हेतु उसके संपूर्ण कथानक को उपन्यास-कला के तत्वों के आलोक में देखना अत्यावश्यक है। अतः किसी भी उपन्यास में जिन तत्वों के समावेश की अपेक्षा की जाती है वे तत्व अग्रांकित हैं–

(1) कथावस्तु (2) पात्र एवं चरित्र-चित्रण

(3) संवाद (4) देशकाल एवं वातावरण

(5) उद्देश्य (6) भाषा-शैली

(1) कथावस्तु–'मानस का हंस' उपन्यासकार पं० अमृतलाल नागर का एक ऐतिहासिक उपन्यास अवश्य है किन्तु इतिहास से यहाँ कथा के संकेतभर ग्रहण किये गये हैं जिन्हें यहाँ कल्पना-तत्व से समन्वित कर घटनाओं और चरित्रों को आदर्श रूप में प्रस्तुत किया गया है। यहाँ कल्पना-तत्व अतीत और वर्तमान को जोड़ता प्रतीत होता है।

प्रस्तुत उपन्यास का कथानक अपने लक्ष्यों और मर्यादाओं में इतिहास और जीवनी से भी कहीं अधिक विस्तृत और व्यापक बन पड़ा है। यहाँ तुलसी के इतिवृत्त के साथ ही तद्युगीन राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक विसंगतियों का सफल चित्रण किया गया है। इसका कथानक सुगठित, रोचक और विचारपूर्ण होने के साथ ही जीवन से अत्यंत निकट है। कथा-प्रसंगों में दृष्टिगत होनेवाला वैविध्य तुलसी की दुःखपूर्ण कथा को गति देने में पूर्णतया समर्थ है। व्यापक कथा-विस्तार के बावजूद इसकी एकात्मकता बनी रहती है।

तुलसी को प्रस्तुत उपन्यास में एक आशावादी कवि के रूप में चित्रित कर उनके लोकधर्मी रूप को उभारने का कवि ने भरपूर प्रयत्न किया है। सामाजिक जीवन से सम्बद्ध इसकी कथावस्तु में तुलसी की निजी व्यथा-कथा की प्रस्तुति के प्रति उपन्यासकार में आग्रह अधिक दिखायी पड़ता है।

(2) पात्र एवं चरित्र-चित्रण–'मानस का हंस' उपन्यास में तुलसी केन्द्रीय पात्र हैं। संपूर्ण कथानक का तानाबाना तुलसी को ही केन्द्र में रखकर बुना गया है। इसके अन्य पात्रों में रत्नावली, गंगाराम, मेधाभगत, राजाभगत, टोडर, बटेश्वर मिश्र आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इनमें से अधिकाधिक पात्रों का चरित्र-चित्रण मनोविज्ञान के धरातल पर किया गया है नतीजतन पात्रों के चरित्र का सजीव अंकन संभव हो सका है। कथानक के विकास में पात्रों की अनुकूलता और सप्राणता की ओर उपन्यासकार का ध्यान विशेष रूप से गया है।

(3) संवाद–प्रस्तुत उपन्यास के संवाद पात्रानुकूल, भावानुकूल, प्रभावोत्पादक और व्यंजक हैं। इन दृष्टियों से कुछेक उदाहरण यहाँ द्रष्टव्य हैं–

Scanned with CamScanner

"लड़के आँगन में खड़े हो गये। एक ने कहा–

"अरे जा रे लबार। झूठ-झूठ की न हाँक।"

मैं गुरुजी के चरण कमलों की सौगंध खाकर कहता हूँ। मैंने पीपल वाले को कई रूपों में देखा है।

गंगा बोला–'राम जी समर्थ हैं। अपनी निंदा-बड़ाई को वह आप संभाल सकते हैं, तुम भूत-प्रेतों से मत खेलो तुलसी।' नहीं, अब तो बात दे चुका, मैं जाऊँगा।"

'तुलसी के चरित्र में निहित भक्ति-भावना की अनन्यता के साथ ही स्वाभिमान की अभिव्यक्ति।'

नि:संदेह 'मानस के हंस' उपन्यास के संवाद चरित्र-प्रकाशक होने के साथ-साथ वातावरण की निर्मिति और कथा-विकास को गति देने में पूर्णतया समर्थ और सफल हैं। जितने सरल और सहज संवेद्य संवाद यहाँ प्रयुक्त हुये हैं ऐसे अन्यत्र बहुत कम ही मिलते हैं।

(4) देशकाल एवं वातावरण–'मानस का हंस' उपन्यास में चित्रित वातावरण देशकाल के अनुरूप दृष्टिगत होता है। इसका वातावरण ऐतिहासिक हैं। इनमें 16वीं शताब्दी में जन्में सुविख्यात भक्त कवि गोस्वामी तुलसीदास के जीवनगत प्रसंगों को उद्घाटित करते हुए तद्युगीन भारतीय समाज में व्याप्त सामाजिक, धार्मिक परिस्थितियों का चित्रण किया गया है। वातावरण की निर्मिति में उपन्यासकार ने घटनाओं और परिस्थितियों के साथ पात्रों की मन:स्थिति के चित्रण से काफी सहायता की है। कुछेक कतिपय स्थलों पर अंतर्द्वन्द्व-चित्रण के कारण वातावरण को मूर्तता प्राप्त हुई है। वातावरण-चित्रण की दृष्टि से यहाँ एक उदाहरण द्रष्टव्य है–

"तुलसी आसन छोड़कर उठे, द्वार खोला। सामने ही राज कुँवरी की आँखों का प्यासा सागर लहरा रहा था। तुलसीदास उसे देखकर बोले–'बैठने आई है ? बैठिए, मैं यहाँ से जाता हूँ।' कहकर तुलसीदास कुटी का पूरा द्वार खोलकर बाहर निकलने लगे।"

× × × × ×

"राजा धीमे, करुण स्वर में कह रहे थे–भौजी तुमसे कुछ नहीं चाहती, बस एकबार तुमसे मिल लेना चाहती है। तुम्हारे दर्शन करके उन्हें सब कुछ मिल जाएगा।"

(5) उद्देश्य–'मानस का हंस' उपन्यास पं० अमृतलाल नागर का एक जीवनीपरक उपन्यास है जिसमें गोस्वामी तुलसीदास के मार्मिक जीवन-चरित्र को यथार्थपरक रूप देने के साथ-साथ उनके द्वारा भोगे गये यथार्थ के परिप्रेक्ष्य में मध्ययुगीन परिवेश का चित्रण करना ही उपन्यासकार का प्रधान उद्देश्य रहा है किन्तु अपनी उद्देश्य-पूर्ति के लिए लेखक ने काल्पनिक पात्र और घटनाओं की सृष्टि करने के क्रम में यथार्थ का गला घोंटने से स्वयं को बचाने की पूरी कोशिश की है। तात्पर्यत: कल्पना और यथार्थ पर उनकी दृष्टि समान रूप से केन्द्रित रही है ताकि कथा की ऐतिहासिकता बनी रहे। प्रतिकूल परिस्थितियों में गोस्वामी तुलसीदास को संघर्ष करते हुए दिखाकर उपन्यास-लेखक ने उनके जीवन को आदर्शों का पुंजर बना रहने दिया है स्पष्ट है कि उनके प्रति लेखक का दृष्टिकोण आद्योपांत आदर्शवादी रहा है।

(6) भाषा-शैली–'मानस का हंस' उपन्यास की भाषा में पात्रानुकूलता के साथ ही सरलता, प्रवाहमयता, सजीवता, रोचकता, सहजता, संप्रेषणीयता आदि सभी गुण विद्यमान हैं। जहाँ तक शैली का प्रश्न है तो इस उपन्यास में शैली विवरणात्मक और विश्लेषणात्मक होने के साथ-साथ कहीं-कहीं आँचलिकता का पूरा प्रभाव लिये हुई दृष्टिगत होती है। कहीं-कहीं रमणीक दृश्यों के वर्णन-क्रम में भाषा अलंकृत और काव्यात्मक भी बन गई है। भाषा में प्रयोग किये गये अवधी के शब्दों से उपन्यास लेखक को अवधी वातावरण की निर्मिति में पूरी सफलता मिली है। तुलसीदास, रत्नावली, मेधाभगत आदि के संवादों की भाषा शुद्ध और तत्सम् प्रधान दृष्टिगत होती है। कहीं-कहीं भाषा में व्यंग्य का भी समावेश हुआ है। नि:संदेह यह उपन्यास वृहदाकार होने के कारण अपने में भाषा और शैली के वैविध्य लिये हुए हैं। इस दृष्टि से कुछेक उदाहरण यहाँ द्रष्टव्य हैं–

Scanned with CamScanner

"मेधा भगत और कैलास कवि के साथ तीर्थाटन करते हुए तुलसीदास का मन क्रमशः शांत हुआ है। मेधाभगत और कैलास दिल्ली से बनारस चले गये। तुलसीदास मथुरा और ब्रजमंडल में भटकते रहे। सोरों में अपने पुराने मित्र और गुरु भाई कृष्ण-भक्त नंददास के साथ कुछ समय बिताया, फिर एकाएक अपनी जन्मभूमि की याद आई, सोचा कि वहीं चलें। नौका से प्रयाग आये और वहाँ से विक्रमपुर।"

× × × × ×

"स्वर मीठा तड़प भरा था। गानेवाली कला-निपुण थी और मनमोहक भी थोड़ी देर में गीत और नायिका की मधुरिमा वातावरण पर जादू बनकर छा गई।"

× × × × ×

"अच्छा रत्नू, इन्हें अभुक्तमूल के संबंध में बतला। तुलसीदास जी कहते हैं कि तेरी व्याख्या गलत है। वह जातक निश्चय ही मूल के पहले-दूसरे चरण की संधि में हुआ होगा।"

× × × × ×

"सुनकर तुलसी पंडित की त्योरियाँ भी चढ़ गईं, वे बोले-गंगेश्वर, अब तुम मेरे हाथों पिटकर ही मानोगे। अपनी माता के आभूषण यह न पाती तो कौन पाता?"

× × × × ×

"जाओ, तुम्हें हमारी सौंह। चमेली जिजिया, तुम इनको भीतर लिवा ले जाओ। हम इनको भगाय के आती हैं।"

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि उपन्यास-कला की दृष्टि से पं० अमृतलाल नागर कृत 'मानस का हंस' उपन्यास उनका सर्वोत्कृष्ट उपन्यास है जिसमें औपन्यासिक तत्वों का सफलतापूर्वक निर्वाह किया गया है।

Scanned with CamScanner